अनुक्रमणिका

अध्याय-1 **भवानीप्रसाद मिश्र जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व।** पृ. 1-29

जन्म तथा जन्मस्थान, माता-पिता, परिवार, विवाह, शिक्षा, रहन-सहन और वेषभुषा, स्वभाव विशेष, संवेदनशील व्यक्तित्व, सामाजिक कार्य मानसन्मान, देहवसान, कृतित्व, काव्यप्रेरणा, काव्यसंस्कार, काव्यसर्जना।

अध्याय-2 **भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य साधना:सामान्य परिचय।** पृ. 30-43

रचनाएँ "गीत फरोश , चकित है दु:ख, अंधेरी कविताएँ, गांधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी खुशबू के शिलालेख, व्यक्तिगत, परिवर्तन जिए, अनाम तुम आते हो, इदं न मम, त्रिकालसंध्या, कालजयी, शरीर कविता फसले और फूल, मान सरोवर दिन, जल रही हैं सडकोपर बत्तीयाँ, सम्प्रति"

अध्याय-3 **भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य: वैयक्तिक अनुभूति की तलाश।** पृ. 44-62

मानवतावाद, सामाजिक विषमता, वर्तमान त्रासदी का चित्रण व्यंग्य, नये व्यक्तित्व को पाने की कामना, प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण, आत्मविश्लेषण, प्रगतिशील चेतना, विनाशकारी विघटनों के चित्र जीवन-बोध, पारिवारिक दृश्यों का चित्रण, आशावादी दृष्टी, कवि की आत्माभिव्यक्ति।

अध्याय -4 **भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य: सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य।** पृ. 63-88

सामाजिक वैषम्य, भारतीय समाज, पारिवारिक संबंध, संकल्प के अभिव्यक्ति, समाज जीवन के विषमताओं के चित्र पूँजीवादी समाज में कवि की विवशता। - विदेशी अनुकरण का नशा, प्रगतिशील चेतना, समाज मे सत्ता वर्ग द्वारा कलाकार की उपेक्षा, समाज में परंपरागत मान्यताओंका -हास, समाज में समता लाने का प्रयास, मानव मूल्योंका चित्रण, समाज मे नारी की स्थिती का चित्रण राजनीतिक परिप्रेक्ष्य।

अध्याय-5 **भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य: गाँधी जीवनदर्शन की उत्कट अभिव्यक्ति।** पृ. 89-112

अध्याय-6 **भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य: शिल्प विधान।** पृ. 113-139

भाषा- प्रतीक विधान, बिम्ब विधान, छन्द विधान, सहजता।

अध्याय-7 भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः समन्वित अनुशीलन। : पृ. 140 - 146